बाइबल के अनुसार बपतिस्मा

नये नियम के महान विषयों में से एक विषय बपतिस्मा का है। नये नियम में ''बपतिस्मा'' शब्द का इसके विभिन्न रूपों के साथ एक सौ से अधिक बार उल्लेख हुआ है। परन्तु, धार्मिक जगत में इस विषय पर काफ़ी उलझन पाई जाती है। वास्तव में बाइबल इसके बारे में क्या कहती है ?

बपतिस्मा क्या है ?

बपतिस्मे का हमारा अध्ययन इस प्रश्न के साथ आरम्भ होना चाहिए कि ''बपतिस्मा क्या है ?'' अर्थात, बपतिस्मा, डुबकी से दिया जाता है, छिड़काव से या उंडेलने से ? क्या ''बपतिस्मा'' शब्द का अर्थ इन तीनों कार्यों में से एक हो सकता है ? लम्बे समय से यह एक विवादात्मक विषय रहा है, परन्तु लगता है कि नये नियम के लिखे जाने के दिनों में इस पर कोई विवाद नहीं था। उस समय बहुत से विवाद थे, और उनका उल्लेख बाइबल में मिलता है; परन्तु ''बपतिस्मा'' शब्द के अर्थ पर हमें किसी विवाद का कोई संकेत नहीं मिलता।

शाब्दिक परिभाषा

''बपतिस्मा देना'' यूनानी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। इसका मुख्य अर्थ ''डुबोना'' है और इस तथ्य को ग्रीक लैक्सिकन अर्थात यूनानी शब्दों की परिभाषा देने वाले शब्दकोष से जाना जा सकता है। (इस यूनानी शब्द के पहली सदी के इस्तेमाल को जानने के लिए हमें अंग्रेज़ी या हिन्दी के शब्दकोष में जाकर ''baptize या बपतिस्मा'' शब्द का अर्थ नहीं मिल सकता।)

एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है ''छिड़कना''; इसका अंग्रेज़ी रूप है *rantize.* इसी प्रकार, एक यूनानी शब्द *cheo* है जिसका अर्थ ''उंडेलना'' है, और अंग्रेज़ी में यह शब्द ''*to pour*'' है। लैव्यव्यवस्था 14:15,16 के सप्तति अनुवाद में ये तीनों शब्द विद्यमान हैं। याजक को अपने हाथ में तेल *डालना* होता था और तेल में अपने दाहिने हाथ की अंगुली

डुबोनी होती थी। फिर उसे तेल को *छिड़कना* होता था। यहां हमें ये तीनों शब्द इन दो आयतों में मिलते हैं, और जिस शब्द का अनुवाद ''डुबकी'' हुआ है वह उसी शब्द का मूल रूप है जिससे हमें ''बपतिस्मा देना'' मिला है। यही तथ्य 2 राजा 5:14 के लिए सत्य है, जिसमें नामान द्वारा *डुबकी* मारने की बात कही गई है। लगता है कि प्रेरितों के दिनों में ''बपतिस्मा देना'' शब्द को साधारण लोग समझते थे, अतः इसके अर्थ पर उस समय कोई विवाद नहीं था। मैं इस बात से कायल हूं कि जो व्यक्ति यूनानी भाषा के बारे में बिल्कुल नहीं जानता जिसमें नया नियम लिखा गया था वह अपनी बाइबल से जान सकता है कि जहां बपतिस्मा शब्द का उल्लेख है वहां उसका क्या अर्थ है।

परिस्थितियों से परिभाषा

विभिन्न आयतों को पढ़कर, हमें पता चलता है कि बपतिस्मे के लिए जो जगह चुनी जाती थी वह नदी या कोई ऐसा स्थान ही होता था जहां ''बहुत जल'' हो (मत्ती 3:6; यूहन्ना 3:23)। शाऊल को बपतिस्मा लेने से पहले, बपतिस्मे के कार्य के लिए तैयार होने के लिए उठने को कहा गया था (प्रेरितों 22:16)। इथियोपिया के अधिकारी के बपतिस्मे की घटना में, प्रचारक और बपतिस्मा लेने वाला, दोनों बपतिस्मे से पहले जल में उतरे थे (प्रेरितों 8:38)। उसका बपतिस्मा उनके जल में रहते ही हुआ था।

आत्मा की प्रेरणा प्राप्त पहली शताब्दी के लोग निश्चय ही विवेकी पुरुष थे, और उनके कार्य भी विवेकपूर्ण थे। यदि बपतिस्मे में किया जाने वाला कार्य छिड़काव या उंडेलना होता तो वे विवेक से कार्य नहीं कर सकते थे। किसी नदी या जल में गए बिना छिड़काव या उंडेलना अधिक सुविधाजनक होता। वास्तव में, यदि बपतिस्मे के लिए केवल छिड़काव ही होता, तो जल में जाने की आवश्यकता ही नहीं थी। इसके विपरीत, डुबकी के लिए इसकी आवश्यकता थी। यदि बपतिस्मे के लिए डुबकी आवश्यक थी तो किसी ऐसी जगह को चुनना जहां ''बहुत जल'' हो, और प्रचारक और बपतिस्मा लेने वाला दोनों जल में जा सकें, बिल्कुल स्वाभाविक ही होगा। क्योंकि हम यह मान लेते हैं कि इन लोगों ने विवेकपूर्ण ढंग से काम किया, इसलिए तर्कसंगत रूप से हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि उस समय बपतिस्मा डुबकी का ही दिया जाता था।

संकेतों से परिभाषा

नये नियम में, बपतिस्मे से सम्बन्धित कुछ आकस्मिक टिप्पणियां की गई हैं जो इन तथ्यों की प्रकृति का संकेत देती हैं। इन संकेतों को देकर लेखक का मुख्य उद्देश्य बपतिस्मे की परिभाषा देना नहीं था। परन्तु, उसने वही किया जिससे इसके बारे में निश्चित तथ्यों को प्रकट किया जा सकता है।

यीशु ने यूहन्ना 3:5 में बपतिस्मे को जल से जन्म कहा। जन्म और छिड़काव में एकरूपता नहीं है। यीशु को ''मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा'' (कुलुस्सियों 1:18) कहा गया है, इसलिए पुनरुत्थान की तुलना जन्म से करने पर, निष्कर्ष निकलता है

कि हमारा जी उठना जल की कब्र से जन्म की तरह ही है।

इब्रानियों के लेखक ने शुद्ध जल से देह के धोने की बात की, और यह अवश्य ही बपतिस्मे के विषय में है (इब्रानियों 10:22)। छिड़काव को शरीर का धोना नहीं कहा जा सकता था। पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिलाया कि बपतिस्मा ''शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है'' (1 पतरस 3:21)। पतरस ने उन्हें यह चेतावनी देने की आवश्यकता समझी कि बपतिस्मा शरीर से मैल उतारने के लिए नहाने के लिए नहीं है। स्पष्टत:, उसे भय था कि लोग बपतिस्मे को नहाने के रूप में समझ सकते हैं। यदि बपतिस्मा किसी के सिर पर पानी की कुछ बूंदें छिड़ककर दिया होता तो यह चेतावनी देने की आवश्यकता नहीं थी। ये और कई अन्य संकेत निश्चय ही बपतिस्मा डुबकी से होने की ओर इशारा करते हैं।

प्रत्यक्ष गवाही से परिभाषा

आइए अब कुछ उन कथनों पर विचार करते हैं जो स्पष्ट रूप से ऐलान करते हैं कि बपतिस्मा क्या है। पौलुस ने कहा है कि ''बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए'' (रोमियों 6:4)। कुलुस्सियों 2:12 में उसने लिखा है, ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।''

यदि किसी व्यक्ति ने कोई ऐसा वाक्य बनाने का प्रचार करना होता जो डुबकी का स्थान ले सकता, तो वह गाड़े जाने और जी उठने से अधिक स्पष्ट शब्दों में ऐसा नहीं कर सकता था। क्या कोई व्यक्ति जिसके सिर पर पानी की कुछ बुंदें छिड़की गई हों, कह सकता है कि वह मसीह के साथ गाड़ा गया और जी उठा है ? ईमानदारी से तो वह यह नहीं कह सकता।

बपतिस्मा कौन ले सकता है ?

बपतिस्मा किसे दिया जा सकता है ? यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका सही उत्तर भी आवश्यक है।

पूर्वापेक्षाएं पूरी की जाएं

बाइबल में स्पष्ट किए गए तैयारी के कुछ कदमों पर ध्यान देकर हम जान सकते हैं कि बपतिस्मा लेने के लिए सही उम्मीदवार कौन है। यीशु ने अपनी महान आज्ञा में बपतिस्मा देने का अधिकार दिया। मत्ती ने लिखा है कि उस आज्ञा के अनुसार, बपतिस्मे से पहले सिखाना आवश्यक है। मरकुस ने लिखा है, कि बपतिस्मे से पहले विश्वास होना चाहिए। लूका के अनुसार, मन फिराने का भी प्रचार होना चाहिए (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)। पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने लोगों को बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराने के लिए कहा था (प्रेरितों 2:38)। इसलिए, जब तक किसी व्यक्ति को

सिखाया न जाए, वह विश्वास न करे और अपने पापों से मन न फिराए तब तक प्रभु यीशु के अधिकार से उसे बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता। यीशु के अधिकार से बपतिस्मा केवल पश्चात्तापी पापी को ही दिया जा सकता है। ''नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देना'' उसके अधिकार के बिना बपतिस्मा देना है, जबकि ''सारा अधिकार'' उसी के पास है (मत्ती 28:18)। तथाकथित ''नवजात शिशुओं का बपतिस्मा'' इतना प्रसिद्ध कर दिया गया है, कि विश्वास करके बपतिस्मा लेने वाले संदेह में पड़ जाते हैं। याद रखें कि यीशु ने केवल विश्वासियों को ही बपतिस्मे का अधिकार दिया है!

''नवजात शिशुओं को बपतिस्मा'' नहीं दिया जाता था

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि प्रेरित प्रभु से आज्ञा पाकर प्रचार करते थे। वे यीशु के अधिकार से परिश्रम कर रहे थे और महान आज्ञा में दिए गए अपने कर्तव्यों को पूरा कर रहे थे। कुछ लोगों ने आरोप लगाया है कि वे नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देते थे। यदि यह बात सही है तो वे प्रभु के अधिकार का उल्लंघन कर रहे थे। फिर, यदि उन्होंने नवजात शिशुओं को बपतिस्मा दिया, तो इसके बारे में प्रेरितों के काम की पुस्तक कुछ नहीं बताती। इस पुस्तक में विश्वासियों के बपतिस्मे लेने का उल्लेख तो है (प्रेरितों 2:37-41; 8:12); परन्तु नवजात शिशुओं के किसी भी प्रकार के बपतिस्मे का कोई उल्लेख नहीं है।

फिरौन का आदेश और यीशु द्वारा बच्चों को आशीष देने का उल्लेख तो है, परन्तु नवजात बच्चों को बपतिस्मा देने से सम्बन्धित कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। पुराने नियम में, परमेश्वर ने नवजात बच्चों के खतने की आज्ञा दी थी, और उनके खतने का बार-बार उल्लेख आता है। उसकी तुलना में, नये नियम में, नवजात बच्चों के बपतिस्मे की हमें कोई आज्ञा नहीं दी गई, और प्रेरितों द्वारा बच्चों को बपतिस्मा देने का कोई उदाहरण भी नहीं मिलता।

''नवजात बच्चों का बपतिस्मा'' देने की वकालत करने वालों ने प्रमाण के रूप में परिवारों के बपतिस्मे की घटनाएं बताई हैं। वे कुरनेलियुस, क्रिस्फुस, फिलिप्पी दारोगे और लुदिया के घरानों की ओर इशारा करते हैं। वे कहते हैं कि इन परिवारों में अवश्य ही नवजात बच्चे भी होंगे, परन्तु यह तो अनावश्यक अनुमान है। नवजात बच्चों के बिना भी तो परिवार होंगे। इस विचारधारा को मानने के लिए उन्हें बहुत सी कल्पनाएं करने की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए, लुदिया के मनपरिवर्तन पर विचार कीजिए। ''नवजात बच्चों के बपतिस्मे'' का तर्क देने वाले को यह भी कल्पना करनी चाहिए कि लुदिया विवाहित थी, उसके बच्चे थे, उन बच्चों में से कई नवजात थे, और थुआतीरे से फिलिप्पी में उसकी व्यावसायिक यात्रा में वे उसके साथ थे। निश्चय ही, कोई भी बात कल्पनाओं की इस शृंखला के आधार पर नहीं मनवाई जा सकती। दूसरी घटनाओं में जिनका हमने उल्लेख किया है, हर एक में कुछ ऐसा कहा गया है जिससे परिवार में बच्चे होने की सम्भावना बाहर हो जाती है। कुरनेलियुस का परिवार ''परमेश्वर से डरता था'' (प्रेरितों 10:2)। क्रिसपुस के परिवार ने ''विश्वास किया,'' (प्रेरितों 18:8) और फिलिप्पी दारोगे के परिवार ने ''विश्वास'' किया (प्रेरितों 16:34)। नवजात शिशु परमेश्वर से डरते नहीं हैं, और वे विश्वास नहीं

करते। इसलिए, उन्हें इन परिवारों में शामिल नहीं किया जा सकता है।

''नवजात शिशुओं का बपतिस्मा'' तर्क विरुद्ध है

यीशु ने समझाया कि नवजात शिशु पाप रहित होते हैं (मत्ती 18:3)। उसने यह भी समझाया कि परिवर्तित होकर हमें ''बालकों की नाईं'' बनना चाहिए। बपतिस्मे का उद्देश्य पापों की क्षमा है (प्रेरितों 2:38), इसलिए एक नवजात शिशु के लिए बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेना असम्भव होगा। वर्षों से ''नवजात शिशुओं के बपतिस्मे'' की बात का समर्थन इस आधार पर होता था कि नवजात शिशु मूल पाप के दोषी हैं, जबकि तरतुलियन जैसे आरम्भिक लेखकों का तर्क था कि नवजात शिशु पाप रहित हैं। कलीसिया की आरम्भिक दो सदियों तक, इस बात की न तो किसी ने वकालत की और न ही कहीं इसका उल्लेख किया। फिर, नये नियम की शिक्षा ऐसी है जो नवजात शिशुओं के बपतिस्मे को स्वीकार करने की सम्भावना को निरस्त कर देती है।

पीडोबेपटिस्ट (नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देने वाले) लोगों ने साधारणतः नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देने के कारण के लिए मूल पाप की बात को त्याग दिया है। फिर, जैसे कि यह बात स्पष्ट है ''नवजात शिशुओं को बपतिस्मा'' देना बिना किसी अर्थ या तर्क के है। बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा मानने का गम्भीरता से किया कार्य है।

क्या बपतिस्मा अनिवार्य है?

यीशु ने अपने चेलों को ''पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा'' देने के लिए कहा (मत्ती 28:19)। निश्चय ही, उस कार्य की जो परमेश्वरत्व के इन तीन सदस्यों के नामों में होना था, एक महत्वपूर्ण रूपरेखा होगी। बपतिस्मे की रूपरेखा क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? बहुत से लोगों का विचार है कि यह केवल किसी की इच्छा से एक औपचारिकता को पूरा करना है। इसके विपरीत, इसकी रूपरेखा ऐसी है कि बिना सही ढंग से बपतिस्मा लिए मसीही नहीं बना जा सकता।

यह उद्धार के लिए एक शर्त है

मसीही बनने के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है क्योंकि यीशु ने बपतिस्मे को उद्धार की एक शर्त बताया (मरकुस 16:16)। बपतिस्मे को उद्धार से पहले रखा गया है। इसे विश्वास के साथ जोड़ा गया है। उद्धार विश्वास तथा बपतिस्मे के बाद आता है। बपतिस्मा अकेली शर्त नहीं है, न ही यह सबसे महत्वपूर्ण शर्त है; परन्तु यह उद्धार की शर्तों में से एक है। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु यीशु के शब्द कभी नहीं टलेंगे। यीशु के अपने शब्दों पर विचार करने के बाद, कौन यह कहने का साहस करेगा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा लेने से इन्कार करे, उसी का उद्धार होगा''? यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।''

यह पापों की क्षमा के लिए है

मसीही बनने के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरितों 2:38)। यह बात आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रेरित पतरस ने कही थी, जिसने वही कहा जो आत्मा ने बुलवाया था। यह लोगों के प्रश्न कि ''हम क्या करें ?'' का उत्तर था। पतरस ने अभी-अभी तीन हज़ार लोगों को परमेश्वर के सुसमाचार का संदेश देकर निरुत्तर किया और उनके पाप से अवगत करवाया था। विश्वासियों के समूह को, उसने कहा था ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; ...'' (प्रेरितों 2:38)।

इस पद में मन फिराने और बपतिस्मे को जोड़ा गया है। इन दोनों को, पापों से क्षमा के लिए बताया है। जो उद्देश्य मन फिराने का है, वही बपतिस्मे का भी है। यदि, कोई तर्क देता है कि, प्रेरितों के काम में मसीही बनने वालों को पापों की क्षमा ''के कारण'' बपतिस्मा लेना होता था, तो फिर उन्हें पापों की क्षमा के कारण ही मन फिराना भी होता था, परन्तु इसका कोई अर्थ नहीं निकलता! यदि पापों से क्षमा मन फिराने के बाद आती है, तो फिर बपतिस्मे के भी बाद क्षमा आती है। हमें मत्ती 26:28 में इससे मिलता-जुलता ही एक वाक्य ''पापों की क्षमा के निमित्त'' मिलता है। मसीह का लहू पापों की क्षमा के निमित्त बहाया गया था। निश्चय ही कोई यह दावा नहीं करेगा कि मसीह ने अपना लहू इसलिए बहाया क्योंकि पाप पहले ही क्षमा हो चुके थे। उसने अपना लहू इसलिए बहाया था कि हमारे पापों की क्षमा हो सके। पापियों को बपतिस्मा लेना इसलिए आवश्यक है ताकि उनके पापों की क्षमा हो सके।

यह हमें बचाता है

बपतिस्मा लेना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि बपतिस्मा अब हमें बचाता है (1 पतरस 3:21)। फिर से, आइए पतरस के शब्दों पर विचार करते हैं। बपतिस्मा हमें बचाता है! निस्संदेह, यह हमें वैसे नहीं बचाता जैसे यीशु हमें बचाता है अर्थात बपतिस्मा हमारा उद्धारकर्त्ता नहीं है। परन्तु, इसे बचाने वाला इसलिए कहा गया है क्योंकि यह उद्धार के लिए दी गई बातों में से एक है। यह मनुष्य को उद्धार का आनन्द लेने के लिए दी गई यीशु की शर्तों में से एक है। बहुत से लोगों ने इस पद की व्याख्या यह निष्कर्ष निकालने के लिए इस ढंग से की है कि बपतिस्मा बचाता नहीं है-जबकि पतरस ने कहा कि यह हमें बचाता है! जब कोई पतरस के शब्दों की ''व्याख्या'' यह निष्कर्ष निकालने के लिए करता है कि बपतिस्मा बचाता नहीं है, तो उसकी यह ''व्याख्या'' इस वाक्य का स्पष्ट इन्कार हो जाती है।

यह हमें मसीह में लाता है

मसीही बनने के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि बपतिस्मा हमें मसीह में मिलाता है (रोमियों 6:3, 4)। मसीह में बपतिस्मा लेकर, हम

मसीह को पहन लेते हैं (गलतियों 3:27) और मसीह में नई सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। छुटकारा मसीह में है (इफिसियों 1:7)। अनन्त जीवन मसीह में है (1 यूहन्ना 5:11)। वास्तव में, सभी आत्मिक आशिषें मसीह में हैं (इफिसियों 1:3)। संसार तो उस दुष्ट के वश में है (1 यूहन्ना 5:19), परन्तु मसीही लोग मसीह के अधीन हैं। बपतिस्मा वह कार्य है जो हमें मसीह में लाता है।

यह हमारे पाप धो डालता है

मसीही बनने के लिए बपतिस्मा लेना अनिवार्य है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि बपतिस्मे का सम्बन्ध पापों के धो डालने से है (प्रेरितों 22:16)। और आयतें भी इस धोने का उल्लेख करती हैं (इफिसियों 5:26; इब्रानियों 10:22; तीतुस 3:5)। शाऊल से कहा गया था, ''बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। दमिश्क के मार्ग में प्रभु ने शाऊल को बताया था कि उसे दमिश्क में बताया जाएगा कि उसे क्या ''करना है'' (प्रेरितों 9:6)। उसे बपतिस्मा लेकर अपने पाप धो डालने के लिए कहा गया था।

बहुत से लोग बपतिस्मे को पापों के धो डालने से जोड़ने पर आपत्ति करते हैं क्योंकि उनका कहना है कि वे यह नहीं मान सकते कि पानी पापों को धो सकता है। परन्तु, प्रेरितों 22:16 में यह नहीं कहा गया कि पाप पानी से धुलते हैं। इसमें तो केवल यह बताया गया है कि वे *कब धुलते* हैं। यूहन्ना ने ऐलान किया कि प्रभु यीशु मसीह के लहू से हमारे पाप धुल चुके हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5)। यह पद हमें बताता है कि *कौन* धोता है परन्तु यह नहीं बताता कि *कब* धोता है। जब हम प्रेरितों 22:16 और प्रकाशितवाक्य 1:5 को एक साथ रखते हैं, तो हमें पता चलता है कि *कौन* (मसीह का लहू) और *कब* (बपतिस्मे के समय) धोता है। निस्संदेह, यीशु का लहू हमारे पाप मूल रूप से धोता है, परन्तु हम मूल रूप से उसके लहू के सम्पर्क में नहीं आ सकते। हमारे लिए आत्मिक रीति से उस तक पहुंचने हेतु परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए साधनों का इस्तेमाल करना आवश्यक है।

यह हमें अनुग्रह से उद्धार दिलाता है

मसीही बनने के लिए बपतिस्मा अनिवार्य है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि हमारा उद्धार अनुग्रह से ही होगा (इफिसियों 2:5, 8, 9; तीतुस 2:11)। कोई भी व्यक्ति जब तक अनुग्रह की शर्तों को नहीं मानता तब तक उद्धार नहीं पा सकता। ''यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही'' (उत्पत्ति 6:8)। नूह ने उस अनुग्रह का लाभ उठाया क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को माना। परमेश्वर ने यहोशू के हाथों में यरीहो नगर दे दिया था (यहोशू 6:2), परन्तु यहोशू ने इस दान को तब तक प्राप्त नहीं किया जब तक उसने परमेश्वर द्वारा ठहराई गई शर्तें पूरी नहीं कीं। हमारी रोज की रोटी परमेश्वर के अनुग्रह से ही मिलती है। यह परमेश्वर का दान है। फिर भी, हमें अपना प्रतिदिन का भोजन तब तक नहीं मिलता जब तक हम प्रकृति के नियमों को पूरा नहीं करते। उद्धार पाने के लिए भी हमें उसकी शर्तों को पूरा करना आवश्यक है। परन्तु अनुग्रह आज्ञा न मानने वालों को नहीं

बचाता। यीशु ने बपतिस्मे की आज्ञा उद्धार की एक शर्त के रूप में दी, इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि हमें परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना ही पड़ेगा।

यह हमें विश्वास से बचाए रखता है

अन्त में, मसीही बनने के लिए बपतिस्मा लेना इसलिए आवश्यक है क्योंकि नया नियम सिखाता है कि हम विश्वास से ही उद्धार पाते हैं। जिस विश्वास से लाभ होता है वह वही विश्वास है जो काम करता है (गलतियों 5:6)। हम मृत विश्वास से, अर्थात बिना कर्मों के विश्वास से उद्धार नहीं पाते (याकूब 2:26)। विश्वास कर्मों के द्वारा ही सम्पूर्ण ठहरता है (याकूब 2:22)। मरकुस 16:16 के अनुसार, बपतिस्मा आज्ञाकारिता का वह कार्य है जो विश्वास से जुड़ा हुआ है: ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।'' यह सत्य है, इसलिए विश्वास जो बचाता है, वह इतना मजबूत होना चाहिए कि वह व्यक्ति को बपतिस्मा लेने के लिए मना सके। विश्वास तभी बचाता है जब मनुष्य आज्ञा मानता है।

सारांश

''बपतिस्मा देना'' शब्द और नये नियम में मिलने वाले उदाहरणों और वाक्यों के अर्थ से हम कई निष्कर्ष निकाल सकते हैं। पौलुस के लेखों में कई संकेत बपतिस्मे की परिभाषा के लिए गाड़े जाने व डुबकी को पूरी तरह से मानते हैं। हम पाते हैं कि पापों से क्षमा के लिए और परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार के लिए पश्चात्तापी विश्वासियों को केवल यही बपतिस्मा दिया जाता था।

हमने देखा है कि बपतिस्मा हमें बचाता है और मसीह में लाता है। हमारे विश्वास को व्यक्त करने के लिए, बपतिस्मा परमेश्वर के अनुग्रह को व्यवहार में लाना है, क्योंकि बपतिस्मा लेने पर ही पाप धोए जाते हैं। इन सभी विचारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बपतिस्मा हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है।

क्या आपका बपतिस्मा इसी तरह और इसी लिए हुआ है? ''अब देर क्यों करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।

तीन महत्वपूर्ण जन्म

प्राकृतिक जन्म। परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस भौतिक संसार में प्रवेश के लिए जन्म का नियम होना चाहिए। आरम्भ में उसके द्वारा प्रदत्त महान और अपरिवर्तनीय नियम यह था कि हर कोई चाहे वह मनुष्य हो या जीव व प्रकृति का कोई अन्य प्राणी अपनी ही जाति के अनुसार उपज दे। यह आज्ञा मनुष्य के लिए भी थी, और इस प्रकार वे जातियां जिनका आरम्भ आश्चर्यकर्म से हुआ था, प्राकृतिक जन्म से आगे बढ़ती रहनी थीं। हम इसे चमत्कारी नहीं बल्कि प्राकृतिक कहते हैं, फिर भी इस बात से बढ़कर अद्‌भुत चमत्कार कभी नहीं हुआ।

नया जन्म। यीशु ने फैसला दिया कि उसके राज्य में प्रवेश के लिए भी जन्म होना चाहिए। निकुदेमु के साथ बातचीत में, यीशु ने नये जन्म की अनिवार्यता पर जोर दिया (यूहन्ना 3:1-5)। यहूदियों के शासक, निकुदेमु ने शारीरिक अर्थात भौतिक जन्म और उससे मिलने वाले विशेष अधिकारों के प्रति अधिक झुकाव रखा होगा। जब यीशु ने बताया कि नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है तो भी उसके दिमाग में शारीरिक जन्म ही था। यीशु ने उसे समझाया कि जिस दूसरे जन्म की वह बात कर रहा था वह शारीरिक नहीं, बल्कि जल और आत्मा से जन्म लेना था।

हम यीशु की भाषा के अर्थ को कैसे तय कर सकते हैं ? बिना किसी सांकेतिक अर्थ का उपयोग किए हम उस महान आज्ञा में जा सकते हैं जिसमें यीशु ने उद्धार की शर्तें बताई थीं। उसने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। इससे हमें यूहन्ना 3:5 पर आत्मा की प्रेरणा से दी गई टीका मिल जाती है। उदाहरण देखने के लिए, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में जाकर मनपरिवर्तन की उन घटनाओं को देख सकते हैं जो आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों के निरीक्षण में घटीं। प्रेरितों 2 में एक आदर्श घटना मिलती है। निस्संदेह, उस दिन उद्धार पाने वाले लोगों ने नये सिरे से जन्म लिया था। उन्होंने क्या किया था ? उन्होंने पतरस द्वारा सुनाए गए वचन को सुना, उस पर विश्वास किया, अपने पापों से मन फिराया और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था। ऐसा करके, उन्होंने जल और आत्मा से जन्म लेकर, नये सिरे से जन्म लिया था। नये सिरे से जन्म लेने के लिए इन आज्ञाओं और आत्मा की प्रेरणा प्राप्त उदाहरणों का अनुसरण करना आवश्यक है: (1) आत्मा की शिक्षा को सुनिए जिसे वह नये नियम के द्वारा बताता है, (2) आत्मा की गवाही पर विश्वास कीजिए, (3) मन फिराने की आत्मा की ताड़ना को मानिए, और (4) अपने पापों की क्षमा के लिए जल में बपतिस्मा लेने की आत्मा की आज्ञा को मानकर उसके पीछे चलें। जब ये सारी बातें पूरी हो जाएं, तो इसे जल और आत्मा से जन्म लेना कहा जाता है। इस प्रकार बपतिस्मा लेने वाला मसीह के राज्य का नागरिक बन जाता है।

अलौकिक जन्म। यीशु ''मरे हुओं में से जी उठने वालों में से पहलौठा'' है (कुलुस्सियों 1:18)। कब्र से जी उठने को जन्म कहा गया है। (यदि यीशु के कब्र से जी उठने को मुर्दों में से जन्म कहा गया है, तो यह समझना आसान हो जाता है कि पानी के बपतिस्मे से जी उठकर हमें जल से जन्मे कैसे कहा जा सकता है।)

यहां यह ध्यान देना दिलचस्प है कि इन तीनों जन्मों से व्यक्ति नये जीवन के आरम्भ से परिचित होता है। अलौकिक जन्म नाश के बन्धन से देह का छुटकारा है। यह कब्र की अंधेरी कैद से जन्म है। इस जन्म में एक अविनाशी और महिमायुक्त देह बाहर आती है।

तीन राज्य

प्रकृति का राज्य। यह भौतिक संसार जिसमें हम रहते हैं शारीरिक देह अर्थात प्राकृतिक मनुष्य का और मनुष्य के लिए है। निस्संदेह, इस संसार का शासक तो परमेश्वर ही है। सारी पृथ्वी के लोग नागरिक हैं। यह संसार प्रकृति के नियमों से ही चलता है। प्रकृति के ये सारे नियम परमेश्वर के ही दिए हुए हैं। वे बिल्कुल सही हैं और हम उन पर निर्भर रह सकते हैं। वे परमेश्वर के अस्तित्व के सबसे ज़ोरदार प्रमाण हैं।

अनुग्रह का राज्य। अनुग्रह के राज्य को ''परमेश्वर का राज्य,'' ''मसीह का राज्य,'' और ''स्वर्ग का राज्य'' कहा जाता है। यह कलीसिया ही है, जो परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में आने वाले लोगों से बनती है (कुलुस्सियों 1:13)। मसीह हमारा शासक है अर्थात वह राजा है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:22, 23)। उसका शासन आत्मा का राज्य है। इसका कानून वही नया नियम है जो पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया था।

महिमा का राज्य। तीसरा राज्य महिमा पाए हुए लोगों का है और उनके लिए जो विश्वासी रहते हैं इस राज्य में प्रवेश देने की प्रतिज्ञा की गई है (2 पतरस 1:11)। यह राज्य स्वर्ग ही है। वहां शासक परमेश्वर का है, और वह छुटकारा पाए हुए लोगों पर सदा तक राज्य करेगा।